‘गोंड जनजाति के श्रमगीतों का हिंदी अनुवाद और समाजशास्त्रीय विश्लेषण’

(वर्धा जिले के विशेष संदर्भ में)

‘Sociological Anaylisis & Hindi Translation of Gond Tribe’s Labour Songs’

(Special Reference to Wardha District)

अनुवाद अध्ययन विभाग में एम.फिल. उपाधि की आंशिक प्रतिपूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध

सत्र-2015-16

ज्ञान शांति मैत्री

शोधार्थी

गोदावरी अजयसिंह ठाकुर

(पं. सं. 2015/04/219/009)

अनुवाद अध्ययन विभाग

अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442 001

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा – 442 001 (महाराष्ट्र) भारत

घोषणा-पत्र

मैं गोदावरी अजयसिंह ठाकुर घोषणा करती हूँ कि अनुवाद अध्ययन विभाग, अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में सत्र 2015-16 के अंतर्गत एम. फिल. उपाधि हेतु लघु शोध प्रबंध **'गोंड जनजाति के श्रमगीतों का हिंदी अनुवाद और समाजशास्त्रीय विश्लेषण'** (वर्धा जिले के विशेष संदर्भ में) **'Sociological Analysis & Hindi Translation of Gond Tribe's Labor Songs'** (*Special Reference to Wardha District*) विषय पर डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी के नियमित शोध-निर्देशन में लघु शोध प्रबंध पूरा किया गया है। यह मेरा मौलिक शोध कार्य है। उक्त कार्य अंशत: या पूर्णत: इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य संस्थान में किसी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है। अत: मैं घोषणा करती हूँ कि इस शोध प्रबंध को पूरा करने में मैंने विश्वविद्यालय के निर्धारित शोध संबंधी नियमों का यथावत अनुपालन किया है।

शोध-निर्देशक

(डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी)

भवदीय

(गोदावरी अजयसिंह ठाकुर)

स्थान : **वर्धा** (महाराष्ट्र)

दिनांक : **15 दिसंबर 2016**

आभार

सर्वप्रथम आभार अनुवाद अध्ययन विभाग के सहायक प्रो. डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी को जिनके निर्देशन के लिए आजीवन ऋणी रहूंगी। यह शोध कार्य उनके निर्देशन के बिना निश्चित समय-सीमा में पूरा नहीं हो पाता। सर अपने व्यक्तिगत कार्यों से भी समय बचाकर मुझे अपना बहुमूल्य समय लगातार देते रहे। सर शोध निर्देशक के साथ-साथ अभिभावक के रूप में हमेशा मेरा उत्साहवर्धन करते रहे। उनके किए गए शोध निर्देशन के लिए मैं उन्हें जितनी बार भी धन्यवाद दूँ वो कम ही होगा। अनुवाद अध्ययन विभाग के संकायध्यक्ष प्रो. देवराज सर आभार व्यक्त करना चहुंगी इन्होंने मुझे अपना मौलिक समय देकर मुझे विषय के संदर्भ में मार्गदर्शन किया। अनुवाद अध्ययन विभाग की डॉ. अन्नपूर्ण सी. मैम दिल से आभारी हूँ। इन्होंने बीच-बीच में अमूल्य समय देकर विषय से संबधित जानकारी दी।

साथ ही साथ विभाग के बाकी शिक्षकों और मित्रों को भी आभार देना चाहूंगी। जिनसे कभी-न-कभी शोध-संबंधी बातचीत हुई।

मैं अपने माता-पिता के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनकी अंत:प्रेरणा आशीर्वाद, सहयोग आत्मबल से मैं अपना लघु शोध पूर्ण कर सकी। अन्यथा यह शोध कार्य करना कठिन हो जाता। खास तौर से आभार देना चाहती हूँ गोंड जनजाति के लोग श्रीमती तुलसाबाई केशवराव सड्डाम (मांडवा), झिबल मसराम (विरुल), शितल मसराम, पार्वती रामजी धुर्वे (बाभुलगांव) संभाजी कुमरे (बोरखेड़ी), श्री प्रकाश पंधरे, गणेश खड़से, प्रो. जनरावजी खंडाते (सुरगांव भजन मंडल), चंपतराव उईके, रमेश उईके (सलधारा), वासुदेव आत्राम (रिधोरा), जिन्होंने मेरे लिए अपना बहुमूल्य समय निकाल कर गीत गाए और मुझे गीतों का संकलन करने में मदद की और मैं समय पर अपना शोध कार्य पूरा कर पायी।

भूमिका

पृष्ठभूमि:

भारत एक विविधताओं से भरा देश है, जहाँ विभिन्न प्रकार के लोग रहते हैं। इन ही लोगों में से एक गोंड जनजाति है जो भारत के विभिन्न भागों में निवास करती है। गोंड समुदाय आदिवासी जनजाति के अंतर्गत आते हैं। आदिवासी वह समुदाय है, जो दुर्गम जंगलों में प्रकृति की गोद में स्वछंद रहता है। प्रत्येक आदिवासी समुदाय की अपनी सांस्कृति विविधता होती हैं। भारत में पाई जाने वाली आदिवासी में मुख्यतः गोंड, बैगा, बोडो, भील, खासी, सहरिया, गरासिया, मीणा, उरांव, आदि हैं। इन सभी जनजातियों में गोंड एक प्रमुख जनजाति हैं जो अपनी विशेष सांस्कृतिक पहचान के लिए जानी जाती है। गोंड समुदाय द्वारा बोली जाने वाली भाषा को'गोंडी' कहते है। गोंडी भाषा भारत के मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, गुजरात आदि में बोली जाने वाली भाषा है। यह दक्षिण-केंद्रीय द्रविण भाषा है। इसके बोलने वालों की संख्या लगभग २० लाख है जो मुख्यतः गोंड हैं। लगभग आधे गोंडी लोग अभी भी यह भाषा बोलते हैं। गोंडी भाषा में समृद्ध लोकसाहित्य है जिसमें मुख्यतः विवाह-गीत एवं कहावतें हैं।

भारत के मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक के जनजातीय क्षेत्रों में लाखों की संख्या में गोंडी भाषा को दैनिक बोलचाल के रूप में लाया जाता है। लेकिन वर्तमान समय में गोंडी भाषा का धीरे-धीरे लोप हो रहा है क्योंकि आज के वैश्वीकरण के युग में जहाँ अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व बढ़ा है वही गोंड समुदाय के लोगों का आजीविका के तलाश में शहरों की तरफ पलायन करना भी इस भाषा के लुप्त होने का एक महत्वपूर्ण कारक है। पलायन के कारण यह समुदाय अपने मूल समुदाय से अलग एक दूसरे भाषाई परिवेश में रहने लगता है जिसके कारण वे अपने दैनिक जीवन में इस भाषा का प्रयोग करना कम कर देते है। इसके अलावा उनकी आज की नई पीढ़ी अपने भाषाई परिवेश से दूर हो गई जिससे उनका गोंडी भाषा से संपर्क कम होने के कारण इस भाषा से वो लोग परिचित नही हो पा रहे है। वही सरकार द्वारा भी इस भाषा के संरक्षण के लिए कोई कदम नही उठाएं जाने के कारण इस भाषा का लोप होता जा रहा है।

इन सबके बावजूद आज भी इस समुदाय के बुजुर्गों द्वारा गोंडी भाषा बोली जाती है। गोंड समुदाय के उत्सवों के अवसरों पर यह समुदाय गोंडी लोकगीतों को गाता है। इन उत्सवों के अतिरिक्त गोंड समुदाय के लोग

घरों व खेतों में काम करते हुए गीत गाते हैं। इन गीतों को 'श्रमगीत' कहते हैं। महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के विभिन्न भागों में गोंड जनजाति पाई जाती है। यह जनजाति वर्धा जिले में सटोडा, मढ़वा, विरुल, सालधारा, रिधोरा, बोरखेड़ी, बाबुलगांव, येलाकेली व सुरगांव में रहती है। गोंड जनजाति के लोगों के द्वारा गाए जाने वाले श्रमगीतों में गोंड जनजाति की संस्कृति, इतिहास और उनकी भावनात्मक वेदना के लक्षण दृश्यमान होते है। गोंड जनजाति के श्रमगीतों की इन सभी विशेषताओं से लोगों को परिचित करवाने के उद्देश्य से मैंने अपने इस लघुशोध प्रबंध के लिए वर्धा जिले में रहने वाली गोंड जनजाति के श्रमगीतों का संकलन किया तथा उन गीतों का हिंदी भाषा में अनुवाद किया। इन श्रमगीतों के आधार गोंड समुदाय के संस्कृति और इतिहास का अध्यायवार वर्णन प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में किया गया है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को तीन अध्यायों में बांटा गया है-

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध **'गोंड जनजाति के श्रमगीतों का हिंदी अनुवाद और समाजशास्त्रीय विश्लेषण' (वर्धा जिले के विशेष संदर्भ में)** के अंतर्गत महाराष्ट्र राज्य के अंतर्गत वर्धा जिले में आवासित गोंड जनजाति के श्रमगीतों का अनुवाद एवं विश्लेषण करने का प्रयास किया गया हैं। प्रथम अध्याय के अंतर्गत वर्धा जिले में पाई जाने वाली गोंड जनजाति और गोंडी बोली का परिचय देते हुए, गोंड जनजाति के भौगोलिक और भाषाई स्वरूप का वर्णन किया गया हैं। गोंडी बोली से मराठी-हिंदी भाषा का अंतरसंबंध किस प्रकार हैं? तथा इसके अलावा गोंड जनजातियों की बोली व उसके अनुवाद आदि का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में वर्धा जिले की गोंड जनजाति के श्रमगीतों का परिचय देते हुए, उन श्रमगीतों का हिंदी भाषा में अनुवाद किया गया हैं। जिसमें गोंडी भाषा के प्रमुख श्रमगीत में घरेलू, कृषि और अन्य श्रमगीत आदि का यथासंभव संकलन और हिंदी अनुवाद करने का प्रयास किया गया हैं और विस्तृत रूप से चर्चा की गई हैं।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत गोंड जनजाति के संकलित श्रमगीतों के समाजशास्त्रीय अध्ययन से गोंड जनजाति का समाज, प्रकृति, व्यावहारिक, वैज्ञानिक, भाषिक, आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक आदि स्थितियाँ इनके श्रमगीतों के माध्यम से प्रकट होती है। गोंड जनजाति के इन श्रमगीतों का एतिहासिक, सांस्कृतिक व भाषाई आधार पर इसका विश्लेषण किया गया है।

इस लघु शोध कार्य से गोंड जनजाति के श्रमगीत केवल गोंडी भाषा में सीमित न रहकर अन्य समाज तथा देश-विदेश में इन श्रमगीतों का प्रसार होगा। महाराष्ट्र राज्य के अंतर्गत वर्धा जिले के गोंड जनजाति के श्रमगीतों का हिंदी अनुवाद सभी लोगों को गोंड समुदाय की संस्कृति और सभ्यता से परिचित करवाने में सहायक होगा।

शोध की केंद्रीय समस्या एवं उद्देश्य:

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का शीर्षक **''गोंड जनजाति के श्रमगीतों का हिंदी अनुवाद और समाजशास्त्रीय विश्लेषण' (वर्धा जिले के विशेष संदर्भ में)''** है। जिसके अंतर्गत महाराष्ट्र राज्य के अंतर्गत वर्धा जिले में रहने वाली गोंड जनजाति के श्रमगीतों का हिंदी भाषा में अनुवाद करना तथा इन गीतों में अंतर्निहित लक्षणों के आधार पर गोंड जनजाति के संस्कृति, इतिहास और उसकी भाषाई विशेषता का वर्णन करना ही इस लघु शोध प्रबंध की मुख्य केंद्रीय समस्या है।

इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य वर्धा जिले में पाई जाने वाली गोंड जनजाति के लोकगीतों में पाये जाने वाले श्रमगीतों का संकलन करके उसका हिंदी अनुवाद कार्य किया जाएगा। इस अनुवाद के माध्यम से अनुवाद ज्ञाननुशासन को समृद्ध किया जा सकेगा। इसके अलावा अनुवाद अनुशासन को समाजशास्त्र के क्षेत्र से जोड़कर गोंड जनजाति के श्रमगीतों से लोगों को परिचित करवाना तथा गोंडी भाषा को संरक्षित करने के लिए लोगों को प्रेरित करना इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य है।

सामाग्री का संकलन:

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सामाग्री का संकलन मुख्यतः पुस्तकालयों से किया गया है। पुस्तकालयों से प्राप्त समग्रियों के माध्यम से गोंड जनजाति के इतिहास, संस्कृति व उसके भौगोलिक स्वरूप के विषय में जानकारी प्राप्त की हुई। गोंड जनजाति के श्रमगीतों का संकलन वर्धा जिले के विभिन्न गांवों में निवास करने वाली गोंड जनजाति के लोगों से किया गया तथा उन लोगों की सहायता से ही शोधार्थी द्वारा इन श्रमगीतों का हिंदी भाषा में अनुवाद कार्य किया गया।

साहित्य पुनरावलोकन:

किसी भी शोध उपाधि के लिए प्रस्तावित शोध विषय से संबंधित कोई शोध कार्य अनुवाद अनुशासन में अभी तक देखने में नहीं आया है। सामाजिक विज्ञान में आदिवासी जनजाति पर केंद्रित शोध और विश्लेषणात्मक कार्य हुआ है। प्रा.दीपक द. कोटरवार का एम.ए. उपाधि हेतु किया गया कार्य, **'यवतमाल जिले के आदिवासी जनजाति की समस्या, उपाय शासकीय योजना का उनके विकास प्रक्रिया में योगदान का**

विश्लेषणात्मक अध्ययन' हैं। किंतु इसमे सभी आदिवासी जनजाति की समस्या उपाय और शासकीय योजना का उनके विकास प्रक्रिया में योगदान का अध्ययन विश्लेषण पर आधारित हैं जिसके अंतर्गत किसी विशेष जनजाति का उल्लेख नहीं है और ना ही उनके लोकगीतों का अनुवाद कार्य किया गया है। डॉ. माहेश्वरी गावित ने **'आदिवासी बोली में लोकसाहित्यविष्कार'** इस पर कार्य किया है। रेखा जुमनाके द्वारा पी.एच. डी. उपाधि हेतु किया गया कार्य **'आदिवासी लोकसाहित्य और संस्कृति का अध्ययन'** ने गोंडी जनजाति के लोकसाहित्य और संस्कृति पर प्रकाश डाला है। लेकिन अनुवाद अनुशासन में गोंडी जनजाति के लोकगीतों का हिंदी अनुवाद और विश्लेषण का कार्य अभी तक देखने को नहीं मिला हैं। किन्तु उल्लेखित सामग्री से इस शोध कार्य में शोधार्थी को सहायता प्रदान की है , इन सबके अतिरिक्त शोधार्थी का यह कार्य नवीन और मौलिक होगा। वहीं अनुवाद अनुशासन में शोधार्थी द्वारा किया गया यह प्रथम कार्य है।

शोध की सीमाएँ :

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का कार्य से ज्ञात होता हैं कि गोंड जनजाति के श्रमगीतों का हिंदी भाषा में अनुवाद करने का प्रयास किया गया हैं। इन गीतों में अंतर्निहित तथ्यों के आधार पर गोंड़ जनजाति के एतिहासिक, सांस्कृतिक और भाषाई लक्षणों को इंगित किया गया है। इनके गीतों में सुख-दुख, के साथ-साथ रहन-सहन, खान-पान आदि का समावेश पाया गया है जो इनकी संस्कृति का प्रमुख अंग हैं। चूंकि इस शोध कार्य के अंतर्गत श्रमगीतों का अनुवाद व विश्लेषण कार्य किया गया है। इसलिए यह शोध कार्य केवल गोंड जनजाति के श्रमगीतों के हिंदी अनुवाद और इन गीतों में अंतर्निहित मूल तथ्यों के समाजशास्त्रीय अध्ययन तक सीमित है।

शोध प्रविधि:

प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत श्रमगीतों के संकलन के लिए साक्षात्कार पद्धति का प्रयोग किया गया है तथा इसके अलावा व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक, गुणात्मक तथा मात्रात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

संभावनाएं तथा उपयोगिता:

प्रस्तुत शोध कार्य गोंड जनजाति की भाषाई संस्कृति के अध्ययन क्षेत्र में शोध के नवीन द्वार खोलेगा तथा गोंडी जनजाति के भाषा के विकास और उनकी जानकारी उपलब्ध कराने के साथ-साथ गोंडी बोली को सुरक्षित

रखने में मदद करेगा। गोंड जनजाति के श्रमगीतों का यह हिंदी अनुवाद कार्य गोंड जनजाति के अलावा अन्य जनजाति समुदाय के लोकगीतों के समीक्षा और मूल्यांकन के लिए प्रोत्साहित करेगा। प्रस्तुत लघु शोध विषय अनुवाद अनुशासन को अन्य ज्ञानानुशासन से जोड़ने के लिए संभावनाएं प्रदान करेगा।

आभार:

यह शोधकार्य शोधार्थी द्वारा सीमित संसाधनों की सहायता से संपन्न किया गया है। शोधार्थी ने प्रस्तुत शोधकार्य पूरी ईमानदारी व परिश्रम से किया है तथा शोध की मौलिकता का पूरा ध्यान रखा है। इन सबके बावजूद शोधार्थी की कार्य क्षमता और ज्ञान की एक सीमा है। अतः इसमें अनेक कमियाँ त्रुटियाँ रह गई होंगी जिसके लिए वह क्षमा प्रार्थी है।

शोधार्थी द्वारा किए गए इस शोध कार्य को पूर्ण करवाने में अनेक लोगों ने योगदान दिए हैं। जिनमें सबसे पहले मैं अनुवाद अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके कुशल मार्गदर्शन में मैं अपना यह शोध कार्य प्रस्तुत कर रही हूँ। मैं अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. देवराज व अनुवाद अध्ययन विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अन्नपूर्णा सी. का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपने मार्गदर्शन व प्रेरणा से मेरे शोध कार्य को सरल बनाया। इसके अलावा मैं अपने विभाग के अन्य सभी शिक्षकों डॉ. रामप्रकाश यादव, डॉ. हरप्रीत कौर व गोपालराम परिहार व अनुवाद विभाग के पीडीएफ़ डॉ.मिलिंद पाटिल व वरिष्ठ शोधार्थी सुधीर ज़िंदे के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। मैं म.गां.अं.हिं.विवि,वर्धा के जनसंपर्क अधिकारी बी.एस.मिरगे के प्रति अभार व्यक्त करती हूँ तथा अपने सहपाठी आशुतोष विश्वकर्मा की शुक्रगुजार हूँ, जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर गोंडी श्रमगीतों के संकलन में मेरा सहयोग किए। इसके अलावा मैं अपने अन्य सहपाठियों में नर्मदा ठाकुर, प्रिया माली व उज्जवल डेका बरुआ तथा उन समस्त मित्रों को आभार देना अपना कर्तव्य समझती हूँ, जिन्होंने कभी न कभी मेरे शोधकार्य में मेरी सहायता किए हैं।

मैं अपने माता-पिता व भाई-बहन के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिनकी अंतःप्रेरणा, आशीर्वाद व मनोबल से मैं अपना यह लघु शोध कार्य पूर्ण कर सकी हूँ। इसके अलावा मैं विशेष तौर पर वर्धा के विभिन्न गांवों में रहने वाले गोंड समाज के लोगों के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे गोंड जनजाति के श्रमगीत उपलब्ध करवाएँ व उन गीतों को अनूदित करवाने में मेरी सहायता किए। जिससे यह लघु शोध कार्य पूर्ण हो सका।